क्रांतिकारी बारहठ परिवार की महान नारी शक्ति

– डॉ. श्रीमती प्रकाश अमरावत
विभागाध्यक्ष–राजस्थानी विभाग
राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर

इस विशाल भूमण्डल पर जहाँ हम रहते हैं उस पुरुष प्रधान समाज में सैद्धांतिक रूप से जो नारी पूजनीय एवं वरेण्य है किन्तु व्यावहारिक जगत में दोहरे मानदण्ड अवश्य देखे जा सकते हैं। इस देश की धार्मिक संस्कृति में तो यही कहा जाता है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।' अर्थात जहां नारी की पूजा होती है, सम्मान होता है, वहां देवता निवास करते हैं और जहां नारी वर्ग का सम्मान नहीं होता, वहां किए गए सभी अच्छे कर्म निष्फल हो जाते हैं। मेरा अनुभव भी यही कहता है कि नारी का सम्मान मिले जो प्रथम रूप में जननी है। नारी माता, बहन, बेटी और न जाने किन–किन रूपों में पुरुष वर्ग की सहायिका बन, उसे कर्तव्यपथ पर आगे बढ़ाने की प्रेरणा शक्ति बन जाती है।

मैं हृदय के गहनतम तल से क्रांतिकारी बारहठ परिवार की सभी नारी शक्तियों को कोटिशः वंदन करती हूं। वीर रसावतार सूर्यमल मीसण ने कहा कि –

हूं बलिहरी राणियां, थाळ बजाणै दीह।

वीर जमी रा जे जणे, सांकळ हीठा सीह।।

कृष्ण सिंह सौदा की सहधर्मिणी बारठ केसरीसिंह, किशोर सिंह और जोरावरसिंह जी की जननी को नमन जिन्होंने ऐसे राष्ट्रभक्त नरसिंहों को जन्म दिया, जिनकी वाणी के ओज से इतिहास बदला, उत्तम कर्मों, त्याग और बलिदान से आज हम आजाद देश के नागरिक बन सके। मेरा परम सौभाग्य है कि उस बारठ परिवार की नारी शक्तियों के विषय में विचारों की

अभिव्यक्ति का सुअवसर मिला। इस देश की नारी तो नाहरी है। सिंह शावकों को जन्म देने वाली है। वो विपत्तियों से कभी न हारी है।

आजादी से पूर्व के समय जब स्त्रियों को इतनी स्वतंत्रता नही थी, उस समय घर की चार दीवारी में रहते हुए जिस समझदारी, सूझ–बूझ, सहनशीलता, त्याग, साहस का परिचय क्रांतिकारी बारठ परिवार की उन नारी शक्तियों ने दिया, उसे आलेखों में आबद्ध नहीं किया जा सकता। परिवार के पुरुष मां भारती को आजाद कराने स्वतंत्रता के लिए साथ पूरा परिवार खड़ा था। शाहपुरा हवेली में उस समय केसरीसिंहजों को पत्नी मणिक कंवर अपने चार बच्चों के साथ और जोरावसिंह की पत्नी अनोपकंवर जो 'मणि' बा को छोटी बहन थी के साथ रह रही थी। यह दोनों काका–बाबा की बहनें थी। घर में नौकर–चाकर, कुछ कामदार भो थे। इसी समय अनोपकंवर के पिता का स्वर्गवास हो गया, जाना जरूरी था। दोनों बहनों ने बच्चों सहित पूरे जाब्ते के साथ बैलगाड़ी में कोटड़ी जाना तय किया। रात के समय कामदारों और विश्वसनीय नौकरों के साथ वे रवाना हो गये। सफर कइ दिनों का था। उन दिनों यातायात के साधनों की कमी थी ही। शाहपुरा दरबार को जैसे ही ज्ञात हुआ, वे इस मौके की तलाश में थे, रातो रात हवेली जब्त कर ली गई। उन दोनों बहनों ने तो स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि दुबारा घर लौट कर आना नहीं होगा। घर आश्रय होता है। उसमें रखी प्रत्येक वस्तु के साथ हमारी यादें जुड़ी होती है। जिस घर की छत के नीचे वर्तमन में भविष्य के सपने बुने जाते हैं, जहां पीढ़ियों की नींव रखी जाती है उस घर (हवेली) से बारठ परिवार को सदा के लिए दूर होना पड़ा। बारठ जी के परिवार जनों की उस पीड़ा को हम महसूस कर सकते है। अब माणिक कंवर जी अपने बच्चों चन्द्रमणि, कुंवर प्रताप, रणजीतसिंह और सौभाग्य मणि के साथ अपने भाई के घर कोटड़ी में रहने लगे।

एक दिन कुंवर प्रताप ने मां से दो रुपये मांगे। बहाना था कि उनकी धोती फट गई है, नई धोती लाने के लिए दो रुपये की मांग थी। माणिक कंवर के हृदय से वात्सल्य का बांध उमड़ा होगा। स्वाभिमान की दीवारें तोड़ता ममता का निर्झर बहा होगा, तब कहीं भाई से दो

रुपये मांगे होंगे। सैंकड़ों, हजारों का दान करने वाली ठकुरानी की क्या दशा हुई होगी यह शब्दों में कैसे कहा जा सकता है। प्रताप धोती खरीदने के बहाने घर से बाहर निकल कर राष्ट्र भक्ति में मरण पथगामी हुआ। माता के नेत्रों में वो प्रतीक्षा की प्रतिमा उभार गया। उस दिन के बाद घर के दरवाजे कभी बंद नहीं हुए। पुत्र मोह ने बंद होने नहीं दिया। कुछ समय पश्चात माणिक कंवर जी अपने पिता के नाम से दूसरी हवेली थी उसमें अलग रहने लगी। यह स्वाभिमान ही तो था। संकट सहना है तो धैर्य के साथ। माणिक कंवर जी बारठ परिवार की आधारशिला थी।

जोरावरसिंह जब भूमिगत या फरार थे तो उनकी कुशलक्षेम के लिए अनोपकंवर जो अधिकारिक पूजा पाठ में ही समय व्यतोत करती। व्रत–उपवास, माताजी की जोत करना और सिर पर पांच सेर का पत्थर रखकर घंटों सूर्य भगवान से प्रार्थना करती। कई महिनों तक जब जोरावरसिंह जी की कोई खबर नहीं आई तो वे विचलित नहीं हुई। अपने आराध्य पर विश्वास लिये दोनों बहनों देशनोक आई, निराहार रहकर करणी मां से प्रार्थना करने लगी। तत्कालीन पजारी अम्बादान जी की माताजी को स्वप्न दर्शन होना व मां करणी का यह कहना कि कोटा से दर्शनार्थी आये वो भूखे हैं। मेरे भोग नहीं लगेगा जब तक वे भोजन ना करें। अम्बादानजी ने ऊपर महलायत में ठहरे दर्शनार्थिया का पता लगाया। स्वयं जाकर मिले और मां करणी की आज्ञानुसार दोनों बहनों ने प्रसाद ग्रहण किया। दोपहर पूजा के बाद वे दोनों श्री करणीमंदिर की परिक्रमा करने लगीं तो आगे जोरावरसिंह जी को देखा। माणिक कंवर जी बोली 'लालजीसा' अपनी बहन अनोप कंवर को मिलाया। तीनों ने बैठकर सुख–दुःख की बातें की। अब उन्हें भरोसा हो गया कि जोरावरसिंह जी की रक्षा मां करणी करेगी। उनका बाल भी बांका नहीं होगा। जोरावरसिंह जी ने उन्हें ढांढस बंधाया। दोनों बहने कोटा लौट आईं।

पुस्तक 'क्रांतिकारी जोरावरसिंह बारठ' में राजलक्ष्मो साधन ने लिखा है कि यह सभी बातें उनकी दादाश्री मातुश्री दोनों बुआसा से सुनने को मिली जो सत्य प्रमाणित बाते हैं।

केसरीसिंहजी के छोटे पुत्र रणजीतसिंह का विवाह कविराजा ठाकुर रघुनाथदान जी (ठीकरिया–बूंदी) की सुपुत्री वीर कुंवरी से अल्पवय में ही हो गया। कालान्तर में यही वीरकुंवरी माणिक भवन वाले माताजी के नाम से जानी जाती थी। ठा. केसरीसिंहजी अपनी पुत्रवधु की सरलता, सहृदयता बुद्धि और चातुर्य, सेवाभाव, त्याग, समर्पण से अति प्रसन्न थे। पहली बार जब जेल से छूटकर घर आये और पुत्र–वधू को देखा तो यही कहा कि ब्रिटिश सरकार ने भले ही मेरी जायदाद जब्त कर ली पर ईश्वर ने पुत्रवधू के रूप में मुझे सब कुछ दे दिया। वीर कुंवरी ने सदैव उनके भरोसे को निभाया। वे करणीजी की अनन्य भक्त थी। माणिक भवन स्थित करणी मंदिर में वीर कुंवरी के स्वर्गवास के पश्चात भी 78–79 वर्षों से अखण्ड दीप प्रज्वलित है। ठाकुर साहब की भविष्यवाणी शत प्रतिशत सही निकली। कोटड़ी की हवेली छोड़कर कोटा आने पर ठाकुर साहब के पास रहने के लिए कोई आश्रय नहीं था। इसी समय जान पहचान से कोटा गोरधनपुरा गांव में श्रीनाथजी (नाथद्वारा) का एक भण्डार खाली पड़ा था। यह मकान जीर्ण–शीर्ण हालत में था। उसमें रहने की अनुमति मिल गई। 400 रुपये मूल्य में उसे खरीदना भी तय हो गया। उस समय अमीरी में पली बढ़ी घर की स्त्रियों ने दिन रात मजदूरों को तरह काम करके उस वीरान, खंडहर ढूंढे को रहने लायक बना दिया। यह मेहनत और लगन परिवार के प्रत्येक सदस्य में देखी गई। सूर्यमल मीसण लिखते है कि –

टोटै सरका झंपडा, घाते ऊपर घास।

वारीजै भड़ झूपड़ा, अधपतियां अवास।।

जो राष्ट्र देश हित में दिन–रात जूझते है उनके पास महल–मालिये कहां होंगे। उनकी आजीविका तो राष्ट्र भक्ति है। त्याग एवं बलिदान है। बारठ परिवार की देश भक्ति व निष्ठा देखकर ही विधाता ने ऐसी कर्मठ, निष्ठावान, धैर्यशील आत्मविश्वास, स्थिर चित्त, निर्भीक महिलाओं को उनकी सहचरी, सहगामिनी, सह–धर्मिणी बना दिया होगा। 'ढूंढे' को महल बनाने वाली उन नारी शक्ति को वंदन।

कोटा के गुमानपुरा स्थित मकान या हवेली में जो उस समय सुनसान जगह पर थी, सड़क के दूसरे किनारे घना जंगला और एक तरफ तालाब था। लोगों का आना–जाना कम होने से केसरीसिंह ने जानबूझ कर इस स्थान को पसंद किया था। उसमें दो कुत्ते पाल रखे थे जिससे अपरिचित व्यक्ति आसानी से प्रवेश न कर सके। यह सब जोरावरसिंह जी के लिए ही किया गया था। वे जब भी छिपते छिपाते भाई से मिलने आते तो घर के बच्चों से ही कहा जाता कि यह महाराज है। इनका नाम अमरनाथ बैरागी है। ये कमरे में ही रहते हैं, कम बोलते हैं.... आदि आदि। बच्चे उनसे दूर ही रहते थे। साधना जी ने एक लेख में लिखा कि छोटे दातासा जब भी आते वे कमरे में बंद रहते। माणिक कंवर जी, उनके भाभीजी के स्वर्गवास का सुना तो जोरावरसिंह घर आये थे। उनकी पत्नी अनोप कंवर पीहर गई हुई थी। जोरावर सिंह को सुबह मुंह अंधेरे ही नहला धुलाकर भारी नाश्ता करवा कर दिन भर के भोजन के साथ कुछ पुस्तकें देकर कमरे में बंद कर ताला लगा दिया जाता था। घर की महिलाओं में निश्चित ही दृढ़ता का भाव रहा होगा तभी बच्चे भी सब समझते हुए भी नामसझ बन कर रहते थे। जोरावरसिंह जी के आने की खबर सुनकर पुलिस घर की तलाशी का वारंट लेकर आती है। केसरीसिंह जी ने कहा कि मेरा भाई जिंदा है या मर गया। उसकी झूठी शिकायत लेकर आप व्यर्थ आये हैं। थानेदार ने वारंट दिखाते हुए कहा कि झूठ है पर हम तलाशी तो लेंगे। ठाकुर साहब को अपनी पुत्रवधू पर पूरा विश्वास था। वे सतर्क रहने वाली महिला थी। उन्होंने डयोढ़ी से बाहर देख लिया था कि पुलिस आई है। पानी खींचने की रस्सी खूंटी से ली और जोरावरसिंहजी के सामने रख दी वे बोलती नहीं थी काकी ससुर से, पर वे समझ गये छत पर लगे इमली क पेड़ से रस्सी बांध वे जंगल के रास्ते चले गये। उस दिन बारिश हो रही थी। वीर कुंवरी भीग गई थी। सत्य प्रमाणित करने के लिए स्नानघर में कपड़े भीगो दिये। रस्सी यथावत रख दिया। ठाकुर साहब ने आधे घंटे पुलिस वालों से बात की। वे नहीं माने तो अंदर डयोढी पर आवाज लगाई "लल्ली बेटा! दरवाजा खोलो, पुलिस तलाशी लेने आई है। वीर कुंवरी ने धीरे से दरवाजा खोल दिया। पूरा घर छान मारा पर मुल्जिम कहां

मिलने वाला था। वीर कुंवरी की सावधानी, तत्परता, नीडरता का परिणाम था। उस दिन ठाकुर साहब के पुत्रवधु को भरपूर आशीर्वाद दिया। कहा कि जिस घर में तुम्हारे जैसी वीरांगनाएं होंगी, वही वीर देश के लिए बलिदान हो सकता है।

अनोपकंवर पति के आने का समाचार सुन पीहर से आई तब तक वे जा चुके थे। पूरा कथानक सुनकर अनोपकंवर भी पुत्रवध का उपकार मानती थी कि उन्होंने उनके सहाग की रक्षा की थी। एक समय जोरावरसिंह जी सीतामऊ से कोटा आये तो बुखार और पैर पीड़ा से कराह रहे थे। रात भर उनका इलाज चला। पैर सूजा हुआ था। पैर में डैरू निकल गया था। लंबे समय तक घर में रखना खतरे से खाली न था। ठाकुर साहब ने कोटा के पास मोरटूका गांव में जहां जाल वृक्षों का जंगल था वहां उनको रखा। अनोपकंवर की मोरटूका गांव में रिश्तेदारी थी। जाल वृक्ष को काट कर नीचे रहने के लिए झोंपड़ी नुमा स्थान बनाया गया। एक छोटी खटली जिस पर खेतों में किसान सोते हैं। उस पर जोरावर सिंहजी को सुलाना पड़ा। अनोपकंवर व वीर कुंवरी दोनों सास–बहू रात में कृषक महिला का वेश बनाकर छबड़ी में उनके लिए खाना, दवाई, पट्टियां, पानी का घड़ा लेकर जाती थी। रात में उनकी पट्टिया करती, बाल्टी जितना मवाद निकलता पर उनकी पत्नी हताश नहीं हुई। पूरे तीन माह तक उनका इलाज चला। सास–बहू रात को 1–2 बजे घर आती। सवाई सिंहजी धमोरा की पुस्तक के एक लेख में मैंने पढ़ा कि रात को जब वे दोनों सास–बहू जाती तो चिर–परिचित आवाज निकालती, जोरावरसिंहजी भी उसी पक्षी की आवाज से उनको प्रत्युत्तर दे देते थे।

नगेन्द्र बाला ने अपने संस्मरण मे लिखा है कि एक समय घर में अनाज कम था। केसरीसिंहजी के घर आने के समय भी निश्चित नहीं था। मणिक कंवर जी के कारण ठाकुर साहब घर की तरफ से निश्चित भी रहते थे।सास बहू ने यह निश्चय किया कि जब तक अनाज की पूरी व्यवस्था नहीं होगी, तब तक हम एक समय भोजन करगे। मां स्वयं भूखी रह सकती है पर बच्चों को भूख, घर के स्वामी की भूख उसे असहनीय है। वे दोनों भूखी रहती

पर घर में किसी को इस बात का पता नहीं चलने दिया।

जोरावरसिंह जी की पत्नी अनोपकंवर जैसे साहसी नारी के जीवन की कठोर परीक्षा कौन दे सकता है? कर्तव्य, कर्म, मर्म, त्याग और तपस्या, पति–भक्ति और आत्म शक्ति की परीक्षा ही उनका जीवन था। वे आजीवन तपस्विनी बन कर रही। वे पति दर्शन कर तृप्त हो जाती थी। स्पर्श के नाम पर चरण स्पर्श उनके संतान होने का तो प्रश्न ही नहीं था। संतान होना मतलब जोरावरसिंह के जीवित होने का प्रमाण। जोरावरसिंह जी ने तो अपने हृदय खोल कर पत्नी से यह अनुमति ली थी। पत्र लिख कर सारी बातें कह दी जिसमें प्रीत, निष्ठा, विश्वास, सुदृढ़ संयोग की बात की। प्रति उत्तर में अनोपकंवर जी ने अपनी करबद्ध मौन स्वीकृति दे दी थी। वे माणिक कंवर की अनुजा, कवर प्रताप की मातृवत काकी मा उस अजय पौरुष की अर्धांगिनी जो थीं, वे वीर पत्नी का धर्म निभाना जानती थी। पति की कुशलता की कामना ही उनका कर्म धर्म व तपस्या थी। एक बात आश्चर्यजनक पर अति संवेदनशील भी थी। क्षत्रिय नारी पति के कंधे पर स्वर्गारोहण करना चाहती है पर अनोपकंवर जी ने कहा कि जो कुछ हो मेरे सामने, सम्मुख हो। मैं अंत में यह पीड़ा लेकर जाना नहीं चाहती कि पीछे आप किस हाल में होंगे?

यहां उनका नारी धर्म सर्वथा भिन्न लगा। ऐसा ही हुआ उनके जीवन काल में ही जोरावरसिंह जी का स्वर्गवास हुआ। अंत समय में पूरा परिवार उनके साथ था।

ठाकुर साहब ने विवाह के समय दहेज में पुत्रियों को पत्र स्वरूप जो अमूल्य भेंट दो वो आजीवन उनके साथ रही। कर्तव्य पथ पर दोनों पुत्रियां कभी नहीं डगमगाई। सौभाग्य मणि के पति जयकरणजी ने वकालात करते समय इन्दौर में नदी किनारे घूमते हुए उनसे पूछा कि तुम्हारे कितने काकोसा है जवाब मिला मेरे एक ही काकोसा (किशोरसिंहजी) है। बार–बार पूछने पर, यहां तक गुस्से से हाथ पकड़ कर यह कहना कि तुम्हें नदी में धक्का दे दूगा। सच बताओ, तुम झूठ बोल रही हो। इतना होने घर भी सौभाग्यमणि ने दृढ़तापूर्वक कहा कि आपकी

इच्छा धक्का दे दें पर मेरे तो एक ही काकोसा है। यह पति ने विनोद ही किया था पर वे अपनी बात से विचलित नहीं हुई। साधना जी को अपने छोटे दातासा के साथ दिल्ली घूमने का अवसर मिला। उन्होंने दूर चलते हुए पास आकर कहा कि ये वो जगह है देख लेना बहन सौभाग्यमणि तो समझ गई पर साधना ने कहा कि यहां कोई विशेष नजारा तो नहीं दिखा, बस मकान ही है। घर पहुंचने पर ठाकुर साहब ने उन्हें दिल्ली चांदनी चौक में बम विस्फोट की घटना का पता चला किन्तु उससे पूर्व ठाकुर साहब ने सौभाग्यमणि की नीडरता का किस्सा पोती राजलक्ष्मी साधना जी को सुनाया इसका अर्थ साफ था कि तुम्हें भी भुआसा की तरह दृढ़ रहना है। चाहे कोई मार दे पर किसी के आगे कोई बात नहीं कहनी है। नगेन्द्र बाला जी तो निर्भीक, स्पष्टवक्ता थी ही, कांग्रेस से विधायक रहने के साथ, भारत की पहली महिला जिला प्रमुख भी बनी।

कोटा बेराज के उद्घाटन भाषण में नहेरू जी ने उन्हें सम्बोधन देकर कहा कि नगेन्द्र बाला जैसी जिला प्रमुख बहनें पहले मिल जाती तो भारत कब का आजाद हो जाता। जिला प्रमुख की तरफ से रखे गये रात्रि भोजन में अनेक व्यंजनों के साथ ज्वार की आधी रोटी नेहरू जी की प्लेट में रखी गई। नेहरू जी ने कड़क कर कहा कि यह क्या है तब नगेन्द्रबाला ने कहा कि ज्वार की रोटी किसानों का भोजन है। तब नेहरू जी ने कहा कि तोड़ी क्यों? उसी समय नगेन्द्रबाला ने कहा कि हो सकता है आपको यह पसंद ना आए। व्यर्थ में जूठा डालने के लिए अनाज नहीं है। यह किसानों के खून पसीने से सींचा गया अनाज है। नेहरूजी ने हंसकर उनकी पीठ थपथपाई थी। ऐसी निर्भीक, बहादुर, सत्य बोलने वाली भारत की बेटी उस क्रांतिकारी परिवार की ही हो सकती थी। राजलक्ष्मी साधना जी तो विदुषी थी ही। आपने अपने संस्मरणों को लिपिबद्ध कर देश व समाज पर बड़ा उपकार किया। इन सब को पढ़कर आने वाली पीढ़ियां उस क्रांतिकारी परिवार के त्याग, बलिदान एवं राष्ट्रभक्ति को जान सकेंगे। उन क्रांतिकारी वीरांगनाओं क कोमल नारी मन की तह तक कोई विरला ही पहुंच पाये। वात्सल्य और सेवाभाव की प्रतिरूप नारी शक्तियां जिनको अहंकार, स्वार्थ, क्रोध हो छू भी नहीं

सकता था। त्याग ही जीवन था। सेवा ही धर्म था। नारीत्व एवं मातृत्व का समर्पण था। उन्हें पुनः वंदन। ठाकुर साहब की पोतियां के संस्मरण इतने सजीव लगे कि सब कुछ मानो प्रत्यक्ष घटित हो रहा हो। ऐसा आभास होने लगता है। पाठकों को अन्तर्चक्षुओं से सब चित्र दृश्यमान होने लग जाते है।